राजनीतिक आदर्श – समाजवाद

समाजवाद को अंग्रेजी में "Socialism" कहते हैं जो कि सोशियस "Socius" शब्द से निकला है। जिसका अर्थ है 'Society' या समाज और यह पूँजीवादी समाजवाद का सम्बन्ध समाज से है व्यवस्था के अन्यायपूर्ण तरीकों से प्रेरित हुआ है। यह सामाजिक तथा आर्थिक असमानता के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया है और इस अराजकता के जिम्मेदार – पूँजीवादी व्यवस्था है यह मनुष्य के द्वारा मनुष्य के शोषण का विरोध करता है। यह खेतों में, कारखानों में, बस्तुओं में, मजदूरों के बच्चों के शोषण का विरोध करता है। यह उस आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था का भी विरोध करता है जो सेवा पर आधारित न होकर केवल मुनाफे की भावना पर आधारित है। समाजवादी विचारको के अनुसार उनका विचार समाज में चल रही प्रतियोगिता को एक चुनौती है, जिस प्रतियोगिता की भावना ने मजदूरों एवं उनकी पत्नियों को मुखमरी की हालत में पहुँचा दिया तथा समाज को दो वर्गों में बाँट दिया – haves and have-nots शोषक और शोषित और उनमें आपसी द्वेष भावना पैदा कर दिया है। अतः समाजवाद समाज की सारी बुराईयों को दूर कर सामाजिक न्याय की कामना करता है।

ब्रेंड रसेक के अनुसार "समाजवाद को भूमि तथा सम्पत्ति के सामाजिक स्वामित्व का समर्थन बताया गया है।"

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका के अनुसार "समाजवाद वह नीति अथवा सिद्धान्त है जिसका उद्देश्य केन्द्रीय लोकतान्त्रिक सत्ता के द्वारा सम्पत्ति का भार से अधिक अच्छा वितरण और उत्पादन करना है।

समाजवाद के प्रमुख लक्षण

(i) समाजवाद व्यक्तियों की तुलना में समाज को अधिक महत्व देता है। यह जनहित में समाज की समुचित व्यवस्था को सर्वोच्च स्थान देता है।

(ii) उत्पादन और वितरण के साधनों पर व्यक्तिगत नियंत्रण को हटाकर राज्य का नियंत्रण स्थापित करना चाहता है।

(iv) व्यक्तिगत लाभ की भावना के स्थान पर सामाजिक सेवा के सिद्धान्त को स्थापित करता है।

(v) आर्थिक क्षेत्र के खुले मुकाबले और मनमाने उत्पादन के स्थापन पर सहयोग और निश्चय उत्पादन को स्थापित करता है।

(vi) समाजवाद नैतिकता के विकास पर बल देता है।

★ समाजवाद का विकास एवं उसके समर्थक

समाजवाद के स्थापना के तरीकों पर एकमत नहीं है। कुछ यह चाहते थे की क्रांति और संघर्ष के द्वारा ही समाजवाद की स्थापना हो सकती है, तो कुछ यह चाहते थे कि वर्तमान संसदीय संस्थाओं के द्वारा धीरे-धीरे इसका विकास हो। इन्हीं सब कारणों से कई सम्प्रदायों का उदय हुआ और सबको अपना विशेष दर्शन था।

सेन्ट साइमन, रॉबर्ट ओवेन, चार्ल्स फोरियर, आदि को यूटोपियन समाजवाद माना जाता है तथा मार्क्स एवं एन्जिल्स को वैज्ञानिक समाजवादी माना जाता है।

यूटोपियन समाजवाद (Utopian Socialism) → समाजवाद विचारधारा का बीज सबसे पहले Plato की कृतियों में Republic नामक रचना में मिलता है, जहाँ उन्होंने व्यक्तिगत सम्पत्ति के साथ-साथ व्यक्तिगत परिवारों की सम्पत्ति का भी समर्थन किया। मध्यकाल में रॉबर्ट ओवेन समाजवाद के समर्थक हुए। ओवेन औद्योगिक क्रांति के बीच में पले-बढ़े थे और वे फैक्टरी व्यवस्था की सारी बुराईयों से परिचित थे। वे लोगों को गरीबी, शोषण, आदि से मुक्त करना चाहते थे। वे पूंजीपतियों और मजदूरों में प्रतियोगिता के पक्ष में नहीं थे, बल्कि उनके सहयोग के आधार पर चलाना चाहते थे। फ्रांस में भी Utopian socialism का बोलबाला था। वहा सेंट साइमन (Saint Simon) ने आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में प्रतियोगिता का विरोध किया और सहयोग पर बल दिया।

परन्तु यूटोपियन समाजवाद वास्तविक कम आदर्शवादी ज्यादा प्रतीत होता था इसलिए बाद में चलकर वैज्ञानिक समाजवाद का उदय हुआ।

वैज्ञानिक समाजवाद - Scientific Socialism > समाज

के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली नाम कार्ल मार्क्स और उनकी मित्र एंजिल्स का है। उन्होंने समाज के हर पक्ष पर विचार किया और वैज्ञानिक पृष्ठभूमि तैयार की जिसके आधार पर अपने विचारों को मूर्त रूप दिया इसलिए इनके विचारों को वैज्ञानिक समाजवाद अथवा साम्यवाद के नाम से जाना जाता है। कार्ल-मार्क्स के समाजवाद पर जो विचार है वह 1848 में "Communist Manifesto" नामक ग्रन्थ में प्रकाशित हुआ तथा "Das Capital" जिसे साम्यवाद का बाइबल माना जाता है में प्रकाशित हुआ। मार्क्स का यह विचार था कि पूंजीपति मजदूरों का शोषण करते हैं। इसे क्रांति द्वारा ही नाश किया जाना चाहिए। वे समाजवाद द्वारा राज्यविहिन - वर्ग-विहिन तथा शोषण-विहिन समाज की स्थापना करना चाहते थे इसे ही वैज्ञानिकसमाजवाद कहा जाता है। जो आगे चलकर मार्क्स के साम्यवाद में परिणत होगया।

समाजवाद के गुण।

(i) समाजवाद मानव व्यक्ति के सम्मान का समर्थन करता है।
(ii) समाजवाद सामाजिक शुभ का समर्थन करता है।
(iii) समाजवाद पूंजी का विरोध करता है क्योंकि पूंजीवाद शोषण पर आधारित है।
(iv) समाजवाद खुली आर्थिक प्रतियोगिता से उत्पन्न धन की बर्बादी को बचाता है।
(v) समाजवाद पूंजीवाद की अपेक्षा न्याय पर अधिक बल देता है क्योंकि यह भूमि, खान कारखानें, खादानों जहाजों तथा रेल-मार्गों पर सारे समाज के नियंत्रण की बात करता है।
(vi) समाजवाद का यह विचार की प्रकृति ने हमें, हवा, पानि, वर्षा, आदी समान रूप से दिया है। अतः भूमि तथा खनिज पदार्थों पर भी सबका समान रूप से नियंत्रण होना चाहिए। इसलिए यह सिद्धांत अधिक स्वभाविक है।
(vii) यह अधिक वैज्ञानिक है > क्योंकि जहाँ पूंजीवाद थोड़े से व्यक्तियों की हित की रक्षा करता है, वहीं समाजवाद सारे समाज के हित की और ध्यान देता है। तथा व्यक्ति को समाज के हित में कार्य करने के लिए प्रेरणा देता है।

(ix) समाजवाद का स्वरूप नैतिक है, यद्यपि इसका आधार आर्थिक है। यह नागरिकों पर यह दायित्व देता है कि वे अपनी सामर्थ्य के अनुसार दूसरे नागरिकों की सेवा करें।

समाज के दोष

(1) यह निरंकुशता तक पहुँचने की सीढ़ी है। आलोचकों के अनुसार समाजवाद के नाम पर सरकार के हाथ में अत्यधिक शक्ति चली जाती है जिससे वह निरंकुश हो जाता है। (4) इसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता नष्ट हो जाती है।

(2) चुंकि उत्पादन के साधनों पर सामाजिक नियंत्रण हो जाता है, अतः व्यक्ति में अधिक उत्पादन करने का उत्साह घट जाता है।

(3) समाजवाद के अन्तर्गत राज्य को न केवल रक्षात्मक कार्य करने होंगे बल्कि उत्पादन का भी नियंत्रण करना होगा। राज्य के लिए इतने सारे कार्यों को संभालना कठिन होगा। इससे समाज में अयोग्यता आएगी।

(4) भ्रष्टाचार अथवा बेईमानी की बोलबाला होगी क्योंकि राज्य सारे निजी उद्योगों का मालिक हो जाता है, अतः भ्रष्टाचार

(5) आलोचकों के अनुसार आर्थिक असमानता तथा सामाजिक दुःखों को दूर करके शांति और आर्थिक समृद्धि लाना व्यवहार में कठिन है।

(6) समाजवाद, समाज को दो वर्गों में बाँट देता है Haves and Have-nots

निष्कर्ष:- समाजवाद की कई आलोचना हुई है, परन्तु इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि संसार की प्रगतिशील शक्तियाँ पूँजीवाद के विरुद्ध तथा समाजवाद के साथ है। समाजवाद आज संसार के विभिन्न भागों में किसी न किसी रूप में फैल चुका है। रूस, चीन, पूर्वी जर्मनी, बल्गेरिया, युगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, रूमानिया, हंगरी आदि निःसंदेह ही समाजवाद में जो भी त्रुटियाँ हैं उसे कुछ हद तक दूर किया जा सकता है।